चुड़आँचल

2024-2025

राजकीय महाविद्यालय नौहराधार सिरमौर

Teaching Staff

Non-Teaching Staff

FROM THE PRINCIPAL'S DESK

प्रिय विद्यार्थियों, शिक्षकगण एवं पाठकवर्ग,

मेरे लिए यह अत्यंत हर्ष और खुशी का विषय है कि हमारे राजकीय महाविद्यालय नौहराधार की पत्रिका "चुडआंचल" के पहले संस्करण का प्रकाशन होने जा रहा है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि हमारे महाविद्यालय के होनहार विद्यार्थियों और शिक्षकों की रचनात्मकता, कठिन परिश्रम की यह पत्रिका अद्भुत मिसाल है।

"चुडआंचल" पत्रिका केवल लिखो का संग्रह नहीं है, बल्कि हमारे महाविद्यालय की गतिशील और जीवंत भावना का प्रतीक है। यह पत्रिका हमारे छात्र-छात्राओं को अपने विचारों को अभिव्यक्त करने, अपनी प्रतिभाओं को प्रदर्शित करने और उनकी शैक्षणिक उपलब्धियो को अभिव्यक्त करने का मंच प्रदान करती है।

इस पहले संस्करण में पाठकों के लिए विभिन्न विभागों के माध्यम से अनेक लेखो, कविताओं और निबंधों का संग्रह प्रकाशित किया गया है, जो हमारे विद्यार्थियों की सृजन क्षमता और उत्साह का जीता-जागता उदाहरण है। यह पत्रिका छात्र-छात्राओं को प्रेरणा देने के साथ-साथ इस वैश्विक चुनौतियां को अपनाकर अपनी रचनात्मक क्षमता को बढ़ाने में सहयोग देगी, ऐसा मेरा विश्वास है। हमारे विद्यार्थियों ने इस पत्रिका को आकार देने के लिए निरंतर कठिन परिश्रम दिखाया है इसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि चुडआंचल पत्रिका भविष्य में नई ऊंचाइयों को छूएगी और छात्र-छात्राओं की बौद्धिक क्षमताओं को प्रोत्साहित करती रहेगी।

मैं संपादकीय टीम, शिक्षकगण, और छात्र- छात्राओं को उनके अथक परिश्रम और समर्पण के लिए हृदय से धन्यवाद देती हूं, जिन्होंने इस पहले संस्करण को साकार रूप प्रदान करने में योगदान दिया। आप सभी शिक्षकगण एवं रचनाकारों के सामूहिक प्रयासों से "चुडआंचल" का प्रथम संस्करण संभव हो पाया है, और मुझे पूरा विश्वास है कि आगामी संस्करण हमारे महाविद्यालय की उत्कृष्टता और जीवंतता को और भी अधिक समृद्ध बनायेगी।

Thank You

www.gdcnohradhar.ac.in

प्रो॰ संगीता झगटा
प्राचार्या
राजकीय महाविद्यालय नौहराधार, सिरमौर

The Editorial

Dear Readers,

It is with immense pride and joy that our college is publishing its first edition of "Chudaanchal", the vibrant voice of Government Degree College Nohradhar. This magazine is more than just a collection of words and images; it is a tapestry woven with the creativity, aspirations, and resilience of our students, faculty and staff.

As Chief Editor, I see this platform as a mirror reflecting the essence of our instituton– a place where knowledge meets curiosit, tradition blends with innovation, and individual voices unite to tell a shared story. Nestled amidst the serene hills, our college stands as a beacon of learning and growth, and " Chudaanchal" embodies that spirit in every page.

This year's edition is a celebration of collective journey . From thought- provoking articles to soulful poetry, from glimpses of campus life bold ideas for the future, each contribution showcases the talent and diversity that define our community.
i extend my heartfelt gratitude to the editorial team, contributors and mentors, whose tireless efforts have brought this vision to life.

To our readers, I urge you to dive into these pages with an open mind and curious heart. let "Chudaanachal" inspire you of the power of expression. Together, let us continue to dream, create, and soar to new heights.

With sincere gratitude and warm wishes,

Asst. Prof. Diwan Chand
Chief Editor

ANNUAL PRIZE DISTRIBUTION FUNCTION

Red Ribbon Club

EMPOWER
EDUCATE
&
PREVENT

सड़क सुरक्षा
जीवन रक्षा

ROAD SAFETY CLUB

ALERT TODAY , ALIVE TOMORROW

ECO CLUB

ATHLETIC MEET

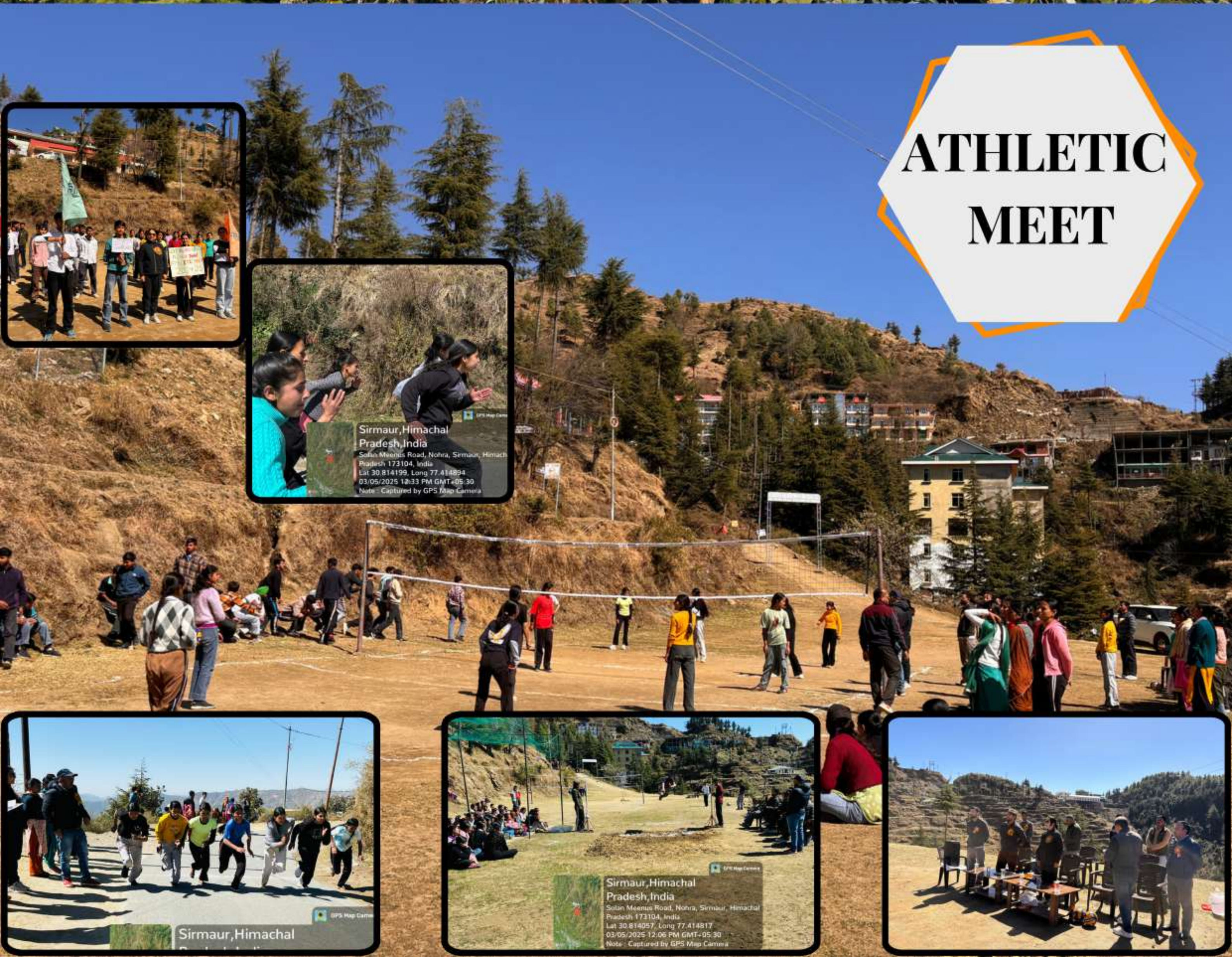

SNAPSHOTS OF CAMPUS LIFE

PRE-COUNSELLING/ CAREER COUNSELLING

INTER-COLLEGE WORKSHOP

हिंदी अनुभाग

पायल
छात्र सम्पादक

सहायक आचार्य ठाकुरेन्द्र नेगी
सम्पादक हिंदी अनुभाग

<u>लक्ष्य प्राप्ति</u>

ये दौर भी बड़े सुहाने हैं, ठान लिया जो अफ़साने हैं, प्राप्त करेंगे हम लक्ष्य को, हम वो जिंदा परिंदे परवाने हैं।
रख एक लक्ष्य बंदे, तू भी उड़ान भर पाएगा, कठिन परिश्रम कर तो देख, तू भी लक्ष्य प्राप्त कर जाएगा।

ईमानदारी से कर कार्य बंदे तू भी धन दौलत प्राप्त कर जाएगा, मंजिल मिल जाएगी जब तुझे, तू भी बुरे पल भूल जाएगा।
रास्ता होगा विकट बंदे, कठिनता से तू ढूंढ पाएगा, जब तू करेगा कोशिश, रेगिस्तान में भी फूल खिल जाएगा।
व्यर्थ न जाएगी यह मेहनत तेरी, कठिन परिश्रम फल लाएगा, एक बार अंगारों पर तो चल बंदे, तू भी लक्ष्य प्राप्त कर जाएगा।

सांझ - सवेरे उठ बंदे, रात को देर से सो जाएगा, कोशिश कर थोड़ी और तू भी लक्ष्य प्राप्त कर जाएगा।
अवगुण तो एक बार छोड़ बंदे, सत्य ज्ञान प्राप्त कर जाएगा, एक कदम तो बड़ा बंदे तू भी मंजिल प्राप्त कर जाएगा।
हौसला मत छोड़ बंदे, तू भी चाँद प्राप्त कर जाएगा, एक बार जो ठान लिया मन में, वे तू प्राप्त कर जाएगा।

पायल
बीए तृतीय वर्ष
अनुक्रमांक – *22032*

मेरी तकदीर

कैसी तकदीर मेरी बस ये, मैं ही जानू, हर रास्ते पर एक नया मोड़ पहचानूं।

दुख इतना कि किसी से कहा ना सकूं, किसी के सामने कभी रो ना सकूं, बस झूठी मुस्कान लोगों के सामने में रखूं। कैसी तकदीर मेरी बस ये, मैं ही जानू, हर रास्ते पर एक नया मोड़ पहचानूं। घुट घुट के जीना पड़ता है,कई बार हर एक पल दिन बीत जाने के बाद, डर लगता है कि कौन सा मोड़ आएगा अब कल।

सबके बारे में सोचता रहता हूं
फिर भी खुदगर्ज में ही कहलाता हूं।
सपने तो सजाए है बहुत मैंने
कुछ बड़ा करना चाहता था
कोई नहीं लगता साथ देने वाला, बस अब एक लंबी सांस लेकर मरना चाहता हूं।

पर फिर भी सोचता रहता हूं
कि अगर मरने से सुलझ जाती सभी उलझने,
तो क्यों ना यह काम मैं बरसो कर देता।
कैसी तकदीर मेरी बस ये, मैं ही जानूं,हर रास्ते पर एक नया मोड़ पहचानूं।

दीपक
बीए तृतीय वर्ष
अनुक्रमांक- *22053*

हिमाचल की शान

पहाड़ों की जहां शोभा निराली, पेड़ों की चमकी जहां हरियाली। मंदिर झरनों की रीत पुरानी ईमानदारी झलकती सबकी जुबानी।

दीहाडी मजदूरी घर है चलाती, फल फूलों और फसलों की पहचान बताती। देवी - देवताओं की जहां सतकारी, बड़ी मेहनती हिमाचली नारी।

ढल - ढलान, पर्वत – चट्टान सादगी है हिमाचली पहचान। सीढ़ीदार खेतों की फसले प्यारी तन - मन - धन सब त्यागकर युवाओं की देशभक्ति नियारी।

छामब - डांगी , झूरी -नाटी, शानू और गीह, गीत नाट्य की प्रियता यह लोकनृत्यी। बड़े स्वादिष्ट है यहां के पकवान, यही तो है हिमाचली शान।

पायल
बीए तृतीय वर्ष
अनुक्रमांक – *22032*

भ्रष्टाचार – अनाचार का बढ़ता प्रभाव

छोटे से इस देश में, क्यों बढ़ा रहे लड़ाई को, थक कर सब नष्ट हो जाएगा, बंद करो इस भ्रष्टाचार की बुराई को। सात- समुंद् पार कर, वो आगे निकल जाएंगे। धन संपत्ति समेट कर, भ्रष्ट पहचान बनाएंगे।

नेता अभिनेता, अमीरी पहचान बना रही। बईमानी के इस जाल में, गरीबी पिस्ती जा रही। खाने को न रोटी है ओढने को ना चादर। ईमानदारी समाप्त हो रही, भ्रष्टता का हो रहा आदर।

हस्ती -खिलती दुनिया में, बढ़ रही महंगाई। ईमानदारी सब भूलकर भ्रष्ट धन कमाने की हो रही बढाई। व्यर्थ जाएगा यह धन, जो प्राप्त हुआ है भ्रष्टता से। साथ कुछ नहीं जाएगा, समाप्त करो इसे एकता से।

महक
बीए प्रथम वर्ष
अनुक्रमांक – *24012*

विश्वास

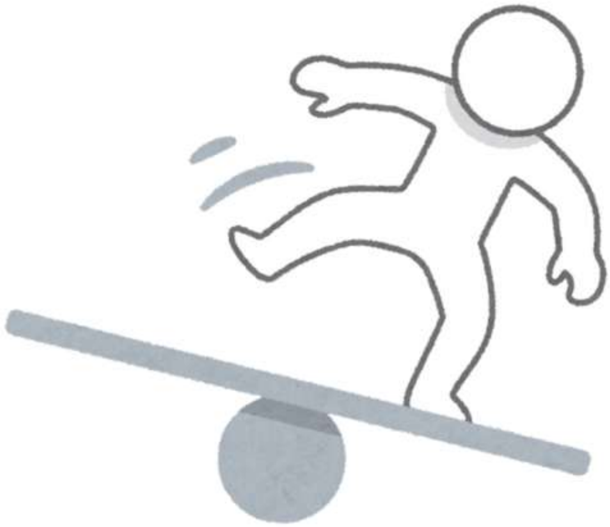

विश्वास को ऊंचा कर, हर कदम में बढ़ाऊंगा, कैसा भी रास्ता हो, मंजिल में पाऊंगा। लाख मुश्किले आएगी, मैं फिर भी ना घबराऊंगा, हिम्मत बांधे अपनी में, बस आगे बढ़ता जाऊंगा।

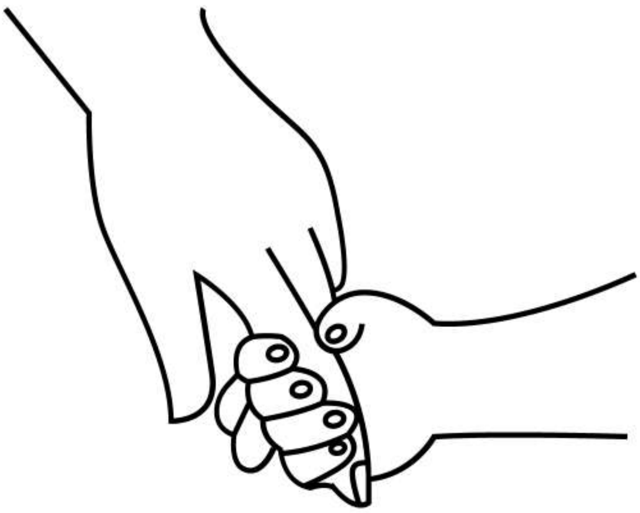

नहीं रुकूंगा नहीं थकूंगा। ऐसा मैं बन जाऊंगा, अपने साथ ही अपने बड़ों का, मैं मान बढ़ाऊंगा। ये धरती क्या एक दिन, आसमा पैरों में झुकाऊंगा, सारी कायनात पर मै, इस कदर छा जाऊंगा।

विश्वास को ऊंचा कर, हर कदम में बढ़ाऊंगा, कैसा भी रास्ता हो, मंजिल में पाऊंगा।

अमन
बीए द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक -23018

मृतकों का संस्कार

जल स्रोतों के पास, व्यक्ति के मृतक शरीर को,
जब अग्नि दी जाती है, मानो सारा गांव दुख में,
एक परिवार बन जाता है, कंधा देते हैं,
सगे संबंधी शमशान घाट पर, पूरे संस्कार निभाते हैं,
मृत्यु के पश्चात, आत्माओं की शांति के लिए,
कई टोटके किए जाते हैं,
पितरों की मुक्ति के लिए,

पितृतर्पण अनिवार्य माना जाता है, पाप मनुष्य करें,
और धोये भागीरथी, यह क्रियाएं संसार में चली रहती है,
हर इंसान की जन्म के साथ, उसकी बढ़ती उम्र,
उसकी मृत्यु की कड़ी के साथ, जोड़ती है,
मृत्यु के समय, दुखों में धार्मिक भाव,
और सुखों में, ईशा भाव को देखा है।

सलोनी

बीए तृतीय वर्ष

पहाड़ी अनुभाग

SINCE 2019

अन्नु
छात्र सम्पादक

सहायक आचार्य वेद प्रकाश
सम्पादक पहाड़ी अनुभाग

गुरु

गुरु ओसो सोबी दा प्यारा, दियो सीये हामों सहारा, न करों इन्हो रा अपमान, सदा करों इन्हों रा सम्मान, गुरु दियो सोबी के शिक्षा, मारे लोणी दिनों री शिक्षा,

जै गुरु सीता कोरले प्यार, तोब ही ओली हमारी नैया पार,गुरु शिक्षकों रा बंधन औसो न्यारा, सोबी भानों दा इ ओसों प्यारा, गुरु सीता न करो खिलवाड़, न तो सारी जिंदगी होली बर्बाद,

गुरु जो दियो हामों जान, सीये औसो सोवी द महान, जे शिष्य जाओ बिगड़ तो, गुरु ही तिन्हो सही राह दिखाओ, गुरु शिष्य आगे यही बताओ, गुरु के कोरले साच्चे दिल अगर प्रणाम, तीथे ओला तुमरा कल्याण।

अन्नू
बी.ए. तृतीय वर्ष
अनुक्रमांक -22002

चीते आओ तोबे बाबा की बातों

जोबे जोबे पोड़ो बाटो दी रातों, तो चीते आओं तोबे बाबा की बातो, ताऊऐ बाओ से गुलिए ढियाओ, शेड़े के पिशो से कुकरे खाओ, ऐबे टोनु के पोढ़ी पढ़ाई, आन्दो न भाजो तेनो होलो चलाए, जोबे गोएणी देखदे घिसरदो लातो, तो चीते आओं तोबे बाबा की बातो।।

एल्लो बोचलो से दोती के होलो, साथा साथिए तोबे कुड़बा पोलो, ऐबे आपणी चोरखी आपणा हांडा भाईए खाइरोआ ऐबे आपणे भाई रा बांडा, जोबे आपणा छोड़ो बाटो दा साथो, तो चीते आओ तोबे बाबा की बातो।।

कुदा चोआई बोणों चोडो, बाबा रो बोणाओ एबे आमे पोरो चोडो, नीमी गोइणीय पोडली बीजों,

थोई ऐबे ऊबी पुराणी चीजों, जोबे बेटा लोओ मुंडो दी शाटो, तो चीते आओ तोबे बाबा की बातों।।

अमन
बी.ए. सेकंड वर्ष
अनुक्रमांक -22018

मांगो रो त्यौहार

उमे गिरी पारो रे आदमी ओसो, उमारे खोरे भोहिते त्यौहार मुनाए जादें, जेनो माइदा एक त्यौहार सोबिदा प्रसिद्ध ओसो, जेरा मांगो रा महीना ओसो,

इसी महीने उमारे मुंड़ाण्टि, अस्कान्टि, डिमान्टि, उतरान्टि त्यौहार मनाए जानें और मांगो रे महीने उमारे पाउणी आन्दी, मंगरादी रे देसो उमारे गी लागो, गी लाणी सारे गांव री, छेड़ूं-छोटू, बूढ़े-नौजवान मोइला आंदी।

तनु ठाकुर
बी.ए. द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक -*23019*

हार हार हार

हार हार हार, केता छोटा शब्द ओसो हार, जूं मुक्तो एथी सी कोरों, याद आती बार-बार। ऐथी हारो रे ओसो कोयो प्रकार,एक हार होओ हमारी असफलता रा और एक हार लोगों म्हारी असफलते गाई हार।

पर अगर हमें ऐथी, दिलों गाए न लो, रेके नजरों नाऐ देखी तो, इस ओसो जिणे रा एक हथियार। हामो आपणी जिंदगी दी, कोभी नोहीं मानिणी पोड़दी हार, हामो शिकुणु पढ़ो, कैसी बोजा नाए मिली होमो इ हार।

और अगली बारी होमो हो ऐसी हारो रा, हल निकालियों आपणे लक्ष्य पाणे खातिर, रोणे पोड़ी तैयार। हार और जीत होओ, एकी सिक्के रे दो पहलू, होमो खूब कोशिश कोरियो, आपणी जीतो गाए लाणा पौड़ी *"हार"!!*

पायल
बी.ए. तृतीय वर्ष
अनुक्रमांक -*22032*

लेख

चूड़धारो री बाटों रा जिक्र

सोबी दी पोहिली होमे ये यात्रा आपी ची कोरदे 'तोबे बोलदे महादेव रा बुलवा आए रा निकली जांदे घोरे चे झिशो बीयाणि दे रूटी रो जाड़े के कापड़े लोयो रो पोंछी जांदे नोहरे बोज़ारो के जेथे ची शुरू होऊँ हमारे चूरधार महादेव री यात्रा घाटों तेथे प्रवेश द्वार *(गेट)* एक नारा लाँदे "हर हर महादेव " रो यात्रा पट्टड़िये तीसी घाटी दी शुरू कोरदे शुरू दी एक दोच्छि पाइंजल लागो तोबे तिथी टोपियो ऊबे जांदेतो लगो चाब *(चाबधार)* जु देखियो नजारा तिदा पांडा जानो देयो तुये तोंबे जाई तो चौमासे रे महीने मौसम देखियो तोबे तूओ प्राकृति री सुन्दरता भी नोजोर आली फूल हरियाली साफ़ पहाड़ स्वर्ग बोली एरिये थोड़ी ना बोली देवो रे भूमि चलो बे आगड़े जान्दे तोबो एबे न आथी घाटी सीधे सीधे आगु जान्दे तो होमे पहुँच दे जमनाये *(जमनाला)*. तेथे ओसो तो बढ़िया जगह तेथे चार दुकानेरो तेथे रे रेट उफ़्फ़ चाय री लाई घुट रो चिस्शो री भोरी बोतल रो चलो आगे तोबे आगड़े आगे निकली जांदे लागी जाओ तबे घोणू जांगों शुरू चौमासे जे होई जाओ धुँध शुरू तो तोबे चालनो पोड़ो कावड़े रे धा दो आगे आगड़े पहुँची होमे पोहुँचदे नींगाई तेथे री चिश एती शेई ज़ेरों हिऊँ रो पाणी जोड़ी बूटी तोबे खांदे तेथे रोटी घोरे ची जू लेई थिती तोबे थोड़ा चा बिशाओंकोरियो निकली जान्दे आगे हर हर महादेव रे नारे रो मोनो दो रो साँसो दा तिसरा कोरदे जाप आगे आगड़े पोहुँचियों तोबे आये जान्दे होमे *(तीसरी)* तेथे ब दो ढाँबे ओसो रो जूँ चालो तेथे हवाँ तेथी के बुलि बे हुमारे चूड़ी री हावा तिसरी चो देखियों तो चारों तोरफो रे आंडे रो पांडे रे गाँव तेथे भी आपना रोमा ओसों तोंबे जाड़े आगे जानो के चेइ तो थोड़ी ची चाय री घुट तोबे चाली जान्दे आगे होमे तीसरी चे रो आखरी ढाबे आके तेथे भी बढ़िया जगह ओसो लोक तेथे तांबू लांदी झूमी यो नाटी लांदी तेथे मंडली दे बैठियो भजन गाँदी रो तेथे ची देखियो बे होमरे शिवलिंग पांडी एक नारा हर हर महादेव बोलदे रो बोड़ी जान्दे होमे आगे एबे लागदी दो बाँटो पांडी एक तुलि जू मंदिरों के जाओ तो एक ग़ाशली होमे जान्दे ऊबे शिवलिंग आके तेथे लागो बे जू घाटी सी न बिसूरी दी कोसरें घाटी रो नाओं *(पोई रो पोष)* आँखीं मीचियों मोनो दो साँसो दो तेसरो नाओ जोपियो पोहुँची जान्दे शिवलिंग आके रो शिव समाह रहे मुझ में और में शून्य हो रहा हूँ "

राजीव दलौंटा
बी.ए. तृतीय वर्ष
अनुक्रमांक -*22056*

PLANNING SECTION

Simran
Student Editor

Asst. Prof. Anukul Kaith
Editor Planning Section

बेरोजगारी की समस्या और रोजगार नीति में सुधार

बेरोजगारी की समस्या और इसके समाधान पर एक विचार करते समय यह समझना जरूरी है कि बेरोजगारी एक जटिल सामाजिक और आर्थिक समस्या है जो न केवल आर्थिक विकास को प्रभावित करतीहै बल्कि समाज में असंतोष और अस्थिरता को जन्म देती है

बेरोजगारी की समस्या के कारण

1 क मंदी- जब अर्थव्यवस्था सुस्त होती है तो कंपनियां और उद्योग नए कर्मचारी नहीं रख पाते जिसके आर्थिकारण बेरोजगारी बढ़ती है
2. शिक्षा और कौशल में कमी- कई बार युवाओं के पास जरूरी कौशल नहीं होते जो उन्हें नौकरी पाने में मदद कर सके
3. जनसंख्या वृद्धि-जनसंख्या में वृद्धि होने के कारण रोजगार की आवश्यकता बढ़ती है लेकिन रोजगार के अवसर कम हो जाते हैं
4. तकनीकी विकास और स्वचालन -नई तकनीक और मशीनों के कारण कुछ क्षेत्रों में मानव श्रम की आवश्यकता काम हो गई है जिसके कारण बेरोजगारी बढ़ती जा रही है

बेरोजगारी की समस्या का समाधान तथा रोजगार नीति में सुधार

1 स्वतंत्र रोजगार सृजन सरकार को छोटे व्यवसाय और स्टार्टअप को बढ़ावा देना चाहिए ताकि रोजगार के अवसर उत्पन्नहो सके
2. कौशल विकास युवा पीढ़ी को तकनीकी और व्यावसायिक कौशल सिखाए जानी चाहिए ताकि वे नौकरी के लिए बेहतर तरीके से तैयार हो सके
3. शिक्षा प्रणाली में सुधार शिक्षा प्रणाली को ऐसी दशा में परिवर्तित किया जाए जो व्यावसायिक क्षेत्र और उद्योगों की मांग से मेल खाती हो
4. उद्योगों का विकास छोटे और मध्यम उद्योगों को प्रोत्साहन देना चाहिए ताकि अधिक रोजगार का सृजन हो सके
5. अंतरराष्ट्रीय निवेश विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए नीति में सुधार होना चाहिए।

Name : Simran
Roll no 24010
Class B.A 1st year

विषय कृषि योजना और ग्रामीण अर्थव्यवस्था

भारत एक कृषि प्रधान देश हैं, जहाँ ती अधिकांश आवादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है और उनकी आजीविका कृषि पर निर्भर करती है इसलिए कृषि योजना और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विकास देश की समग्र आर्थिक वृद्धि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है इसके अंतर्गत प्रमुख बिंदु शामिल होते हैं:

1. हरितक्रांतिउन्नत बीज, रासायनिक उर्वरकों और सिंचाई प्रणाली के विकास से कृषि उत्पादन में वृद्धि।
2.सिंचाई एवं जल प्रबंधन जल संरक्षण तकनीक और ड्रिप इरीगेशन जैसी आधुनिक वीधियो को बढ़ावा
3.फसल बीमा योजना, प्राकृतिक आपदाओं से बचाव के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा जैसी योजनाएँ।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विकास

ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि, लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, पशु पालन, मत्स्य पालन और कृषि आधारित व्यवसायों पर निर्भर करती है इसके विकास के लिए निम्नलिखित प्रयास किए जा रहे।
1. ग्रामीण बुनियादी ढांचा सड़को, बिजली, जल आपूर्ति का विकास
2. महिला सशक्तिकरणा: स्वयं सहायता समूह (SHU) गहिला उद्यमिता को बढ़ाना
3.स्वास्थ्य और शिक्षा : आयुष्मान भारत योजना मिशन जैसी पहल ।

कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विकास भारत की आर्थिक समृद्धि के लिए आवश्यक हैं, इससे न केवल ग्रामीण जीवन स्तर से सुधार होगा, बल्कि देश की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी।

नाम: अनिषा शर्मा
कक्षा :B.A II year
अनुक्रमांक = 23002

Infrastructure Development: The basis of a country's prosperity and progress

Infrastructure is the backbone of any country. It includes roads, railways, airports, dams, industrial parks, etc. It requires a well-organized system of power supply, irrigation, and communication facilities. A developed infrastructure not only makes life easier but also accelerates industrial production, trade, investment, and economic growth.

Major components of infrastructure Development

Transportation Infrastructure: Roads, railways, air, and public transport are the backbone of any country's economy.

Energy Infrastructure:

Energy production and distribution improve industrial and domestic needs.

Benefits of infrastructure development:

Economic growth: A strong infrastructure attracts foreign investment and accelerates economic development.

Employment generation: Creates new employment opportunities in various stages of construction and operation.

Challenges of infrastructure development in India:

1. *Lack of financial resources*
2. *Bureaucratic and policy obstacles*
3. *Need to maintain environmental balance*
4. *Government efforts and schemes:*
5. *Bharatmala Project (for road development)*
6. *Sagarmala Project (to promote maritime trade)*
7. *Smart City Mission (for urban infrastructure)*
8. *Digital India and 5G initiatives.*

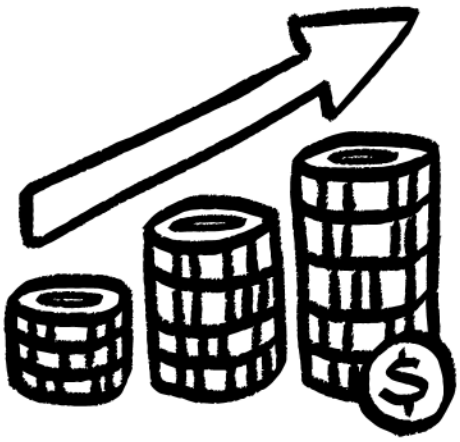

Anurag Thakur
Roll No = 24005
CLASS :B.A 1st YEAR

Social and Economic Policy Planning

Social and economic policy planning is essential for guiding a nation's development and ensuring the well-being of its citizens. It involves the formulation of strategies that address societal challenges, promote economic growth, and reduce inequality. These policies focus on improving public services like healthcare, education, and housing, while also fostering economic opportunities for all segments of society. The goal is to create a balanced approach that integrates both social welfare and economic stability, leading to sustainable development and enhanced quality of life for the population.

In a rapidly changing global environment, effective policy planning is crucial to address issues such as poverty, unemployment, and environmental sustainability. Governments must design policies that not only respond to immediate challenges but also anticipate future needs, ensuring long-term prosperity and equity. Social and economic policy planning, therefore, plays a vital role in shaping the future of nations, driving progress, and creating an inclusive society where all individuals can thrive.

Key Points of Social and Economic Policy Planning:

- *Purpose: Balances economic growth with social welfare to address poverty, inequality, healthcare, education, and employment.*
- *Key Areas:*
    - *Social Welfare: Provides essential services like healthcare, housing, and education.*
    - *Economic Growth: Promotes investment, trade, and infrastructure development, creating job opportunities and ensuring financial stability.*
    - *Poverty and Inequality: Focuses on fair wealth distribution and income support programs.*
    - *Environmental Sustainability: Promotes renewable energy and responsible resource management.*
    - *Labor and Employment: Ensures fair labor practices and job security.*
    - *Health and Education: Guarantees equal access to essential services.*
- *Challenges:*
    - *Globalization: Impact of global trends on local economies and markets.*
    - *Political Divisions: Difficulty in achieving consensus on policy priorities.*
    - *Resource Constraints: Limited financial and human resources to implement policies.*
    - *Corruption and Inefficiency: Undermines effective policy implementation.*
- *Conclusion: Effective social and economic policy planning is essential for creating an equitable, sustainable society, fostering long-term growth, and improving well-being.*

NAME :PIYUSH
ROLL NO 24009
CLASS B.A 1ST YEAR

Infrastructure and Development

Infrasture is the backbone of any nation's development. it includes roads, bridges, railways, water supply and digital connectivity. Good infrastructure makes daily life easier and helps in the economic growth by improving transportation, trade and communication

Imagine a village without proper roads. people face difficulties in reaching markets, hospital, and schools. But when good roads are built, travelling becomes smoother, business expands, and the overall quality of life improves. Similarly, reliable and proper electricity ensures that industries run efficiently, students can study without interruption, and hospitals can function properly.

In recent years, India has made significant progress in infrastructure development. Highways, metro system, and smart cities are transforming both urban and rural areas. the construction of new airports and railway networks is making travel faster and more accessible. Digital infrastructure, like better internet connectivity and mobile networks has opened new opportunities in education, healthcare and business. Online learning platforms have made quality education available to students in remote areas, while digital banking has improved financial inclusion. however, challenges like funding, digital fraud, environmental concerns and rapid urbanization still need to be ensure balanced growth.

Sustainable and eco-friendly infrastucture is the need of the hour. Using renewable energy sources, such as solar energy and wind energy can reduce pollution and ensure long term benefits. Recycling materials and adoptingh gree construction method can make infrastructure project more environment friendly. when we invest in strong and reliable infrastructure today, we build a better and more secure future for the coming generation.

A well developed infrastructure is not just about progress; it is about improving lives and ensuring equal opportunities for all.

Shubham
B.A. 1st Year

ENGLISH SECTION

Aastik Chauhan
Student Editor

Asst. Prof. Dharam Devi Negi
Editor English Section

DUSK TILL DAWN

When the day comes to an end,
The sun seems to pretend.
Birds return to their nests,
And a bird comes to my right side,
Full of captivity inside.

Looking at the sunset,
My inspirations find their rest.

Sudden silence spreads everywhere...

Everything lies down in the dark,
The troubles of my life feel like sparks.

The next day will come with a new dawn.

Sakshi Chhinta
B.A. 2nd Year

YOUTH IN THE GRIP OF *STRESS*

Youth is often considered the most vibrant and exciting stage of life, filled with energy and endless possibilities. The period between 18 and 19 is particularly significant, as young individuals transition into adulthood, filled with dreams and aspirations. However, alongside this vibrancy comes a fair share of challenges, confusion, and stress.
Today's youth are under immense pressure to succeed academically, choose the right career, and meet societal expectations. The competitive nature of modern life adds to this pressure, leaving many feeling overwhelmed. Whether it's academic stress, the pressure to secure a job, or the complexities of relationships, young people often face situations that can lead to anxiety and emotional strain.

While this stress can sometimes lead to feelings of failure or even depression, it is important to recognize that stress is not always a negative force.
When approached with the right mindset, stress can serve as a motivator, pushing young people to grow, learn, and achieve their goals.
With proper coping mechanisms and support, the youth can navigate these challenges and come out stronger, more resilient, and ready to face the future with confidence.

ANKUSH
B.A. 1ST YEAR

Whispers of a Vanished Childhood

There was a time when laughter filled the streets,
when hopscotch squares were drawn with chalk,
and bicycle bells played the songs of summer.

Evenings smelled of fresh soil and flying paper planes,
the wind carried secrets whispered between friends,
and fireflies were tiny lanterns lighting up the dark.

Moonlit rooftops were kingdoms,
where stories were told under a sky full of stars,
and nights felt endless,
like dreams too beautiful to end.

But somewhere along the way, those colours began to fade...

The streets grew quiet, lost in the noise of machines.
Hands that once flew paper planes now scroll through screens,
and the glow of fireflies has been replaced
by the cold light of a thousand notifications.

The rooftops stand empty, the skies forgotten,
the echoes of laughter lost in busy schedules.

Perhaps childhood never leaves, it simply fades—
waiting in the pages of old books, in the scent of first rain,
in the lullabies we no longer sing.

Shubham
B.A. 1st year

Drugs: The Destructive Path We Must Avoid

In today's world, drug abuse has emerged as one of the most pressing issues faced by individuals and societies alike. What often starts as an experiment or a way to cope with stress can quickly spiral into a destructive cycle of addiction, leaving a trail of broken lives in its wake. *"Drugs: The Destructive Path We Must Avoid"* seeks to bring awareness to the dangerous allure of drugs and the irreversible consequences they can bring. As we examine the realities of addiction, its impact on mental health, relationships, and communities, it becomes clear that the fight against drug abuse is not just about prevention—it's about reclaiming the lives lost to its grasp. Through this exploration, we hope to inspire a collective effort to raise awareness, offer support, and ultimately prevent others from walking down this perilous road.
Drugs abuse or substance abuse is a disorder characterized by excessive use of habit-forming drugs and misuse of over-the-counter medicines. The illegal use of drugs often leads to severe addiction and dependence, resulting in numerous negative consequences.
Youth are under stress and turn to drugs. Due to the excessive pleasure, they experience from using drugs, they become addicted. This refers to the use of certain chemicals to create pleasurable effects on their brain. The problem has been increasing at an alarming rate, especially among youth under the age of 30. Apart from the long-term damage to the body, drug abuse also puts addicts at risk of contracting HIV, hepatitis B, and other infections.

Causes of Drug Abuse:

Drugs of abuse are typically psychoactive substances that people use for various reasons. Some of the common causes of drug abuse include:
1. Curiosity and Peer Pressure: Many schoolchildren and young adults are influenced by curiosity or peer pressure, which leads them to try drugs. The desire to fit in or explore the effects of drugs often initiates the abuse.
2. Misuse of Prescription Drugs: Prescription drugs, originally intended for pain relief, are sometimes misused for recreational purposes. Over time, this misuse can lead to addiction.
3. Cultural or Religious Practices: In some cases, chemicals are used as part of religious rituals or traditional practices, leading to potential abuse.
4. Recreational Use: Some individuals turn to drugs for recreational purposes, seeking heightened creativity or altered states of consciousness.

Remedies to Address Drug Abuse:

To combat drug abuse, several measures can be implemented:
1. Education and Awareness: Raising awareness about the dangers of drug use and its long- term consequences can help reduce curiosity-driven experimentation, especially among youth.
2. Stronger Regulations: Ensuring that prescription drugs are prescribed and monitored more strictly can help prevent misuse. Additionally, increasing access to addiction support services can help individuals who misuse these drugs.
3. Cultural and Social Support: It's important to offer alternative, healthy practices for individuals in communities where drug use is embedded in cultural or religious rituals. Social support systems can provide guidance and healthier coping mechanisms.
4. Promoting Healthy Recreation: Encouraging creative and healthy recreational activities can prevent individuals from turning to drugs as a means of escaping or seeking stimulation.

Conclusion:

Drug abuse is a growing concern, especially among youth. While there are various reasons behind why individuals turn to drugs, it is crucial to address the root causes and offer support and education to prevent misuse. By raising awareness, strengthening regulations, and promoting healthier alternatives, we can reduce the impact of drug abuse and help those affected lead better, drug-free lives.

Dishant
B.A. 1st year

The Mountain's Song

Towering mountains, snow-capped peaks,
They provide my soul with what it seeks.
A mountain of trees, a rugged base,
In the end, a blossom's grace.

Multi-colored flowers, the mountain's crown,
A beauty that lets my spirit drown.
The sunlight dances on the pale snow,
Pain lingers, yet it has its glow.

The mountains of love, nothing higher,
Nothing greater, nothing more desired.
Mountains blush in the setting sun,
A love divine, as two become one.

I could gaze upon them all day long,
With hot piping tea and my favorite song.
The mountains of splendor, forever free,
Leaving me in wonder, eternally.

Prince Tomar
B.A. 1ST Year

The Absurdity of Wisdom: Hazlitt's Critique on Intellectual Ignorance"

William Hazlitt's *"On the Ignorance of the Learned"* was clearly ahead of its time. Written in the 19th century, it still speaks to us today, especially when we look at the current state of education and the modern-day intellectuals. Hazlitt, in his typical sharp and witty fashion, exposes a shocking paradox: those who are deemed the most educated are often the most clueless when it comes to the practical matters of life. Sound familiar? Perhaps you've encountered a few professors who can explain the intricacies of Plato's philosophy but have no idea how to use a modern-day printer.

The Cult of Intellectual Superiority

The modern-day academic elite, much like Hazlitt's learned individuals, have a peculiar way of thinking that their knowledge makes them inherently superior to, well, everyone else. Haven't you ever met someone who has spent years collecting degrees like they're Pokémon cards, only to spend hours explaining the exact angle at which to look at the moon in relation to the tides— completely oblivious to the fact that most of society is concerned with, say, feeding their families or paying rent? Hazlitt had it right: intellectuals can be incredibly smug about their education, yet they often miss the bigger picture, which is anything *outside* of their textbooks. They have a deep understanding of *nothing* that actually matters.

The Shrinking Minds of the "Enlightened"

Of course, Hazlitt's real jab is aimed at the growing arrogance of intellectuals who are so consumed by their specialized knowledge that they fail to see the limitations of their understanding. In today's world, this looks like the professor who knows everything about a narrow field but has zero clue about anything outside of it. These are the individuals who have convinced themselves that their advanced degrees have made them infallible, experts on *everything*—except the real world. They preach grandiose theories about society's ills, yet fail to notice the structural problems within their own academic bubbles. If you can't handle a "basic" conversation with a non-expert without looking down on them, perhaps it's time to check your intellectual ego.

The Education That Doesn't Educate

So, what's Hazlitt's big takeaway for us? Perhaps it's time to stop worshipping the almighty "intellectual" and start seeing knowledge for what it truly is: a tool, not a weapon to wield in a quest for superiority. The modern education system, with its emphasis on specialization and narrow expertise, often turns out individuals who know a lot about nothing that matters. And, as Hazlitt so cleverly points out, it's not the *knowledge* itself that's the problem—it's the *lack of wisdom* in applying it. So, let's all raise a glass to the "learned" ones: those who know how to analyze a Shakespearean sonnet, but can't figure out how to fill out their own tax forms. Cheers to them! We can only hope that one day they'll take a break from their high-brow discussions and join the rest of us in the world of practical reality.

AASTIK CHAUAHN
B.A. 2ND YEAR

THE SOUND OF SILENCE

Silence is a language of its own,
revealing what words often cannot.

It serves as a refuge, a shield, or a mirror—
reflecting unspoken emotions and hidden truths.
In conflict, it creates space for a peaceful opinion;
in love, it fosters intimacy through shared presence

Yet, silence can also build walls,
leading to distance and misunderstanding when left unaddressed.
It teaches patience, presence, and the courage to
confront what we often avoid.

In its stillness, we find clarity and strength,
realizing that some truths are meant to be felt,
not spoken.

Silence is not emptiness—it is a quiet force,
shaping our connections and inner worlds,
reminding us that the loudest truths often
lie in the spaces between words.

Ritik
B.A. 1st Year

Is Money Evil?

*"Money is dirty,
People with money are greedy'
Business-minded people are crooks,
The love of money is the root of all
evil."*

While growing up, I often heard comments like the ones above, and, amusingly enough, I still hear them today. No doubt about it—money is such a sensitive subject. It's almost as if it has its own sacred place in the universe, off-limits to the common masses. After all, discussing money is like strolling into a cathedral and loudly questioning the existence of the divine. The very thought of it seems to send shivers down the spine of anyone within earshot, as though talking about money is the equivalent of committing some intellectual sacrilege. People act as though the mere mention of it will irreparably stain their moral character. As a student, I could already hear the collective outcry: "How dare you sully the hallowed halls of academia with this filthy, corrupt subject!"

It's as if money is the one subject that simply doesn't belong in an intellectual discourse. There's this strange, unspoken rule that to talk about money means you are automatically lowering yourself to some base, materialistic level. Yet, ironically, it's often the same people who avoid the subject that are secretly obsessed with it.

But then, in a moment of unexpected clarity, it finally dawned on me—our ignorance about money may well be the root of far more evil than anything our knowledge of it could ever be. We fear it, we avoid it, but we rarely understand it. Our ignorance breeds distrust and corruption, all while the subject remains taboo. So, with a rebellious heart and a side of guilt, I decided to press on with this paragraph—despite the looming fear of what my readers might say. Because, perhaps, it's time we stop pretending that money isn't an essential part of our lives. And maybe, just maybe, it's time to confront the evil of our ignorance about it

Sakshi Chhinta
B.A. 2nd Year

The ignited minds of the youth is the most powerful resource on the Earth.

-A.P.J. Abdul Kalam

Visual and Graphic Designers

Kartik Thakur

Asst. Prof. Commerce

Dharam Devi Negi

Asst.Prof. English

College Student Central Association

The Editorial Board

Vision

"To promote education that includes moral values, endurance, self- confidence, and a sense of hard work in students"